2 जुलाई 2010, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

जैन
# पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

संसार दु:खों से मुक्त होने के लिये मुक्ति के मार्ग का पथिक होना आवश्यक ही नहीं अनिवार्य है।

ह्न बारह भावना अनुशीलन, पृष्ठ-56

वर्ष : 33, अंक : 7 सम्पादक : पण्डित रतनचन्द भारिल्ल आजीवन शुल्क : 251 रुपये

जुलाई (प्रथम), 2010 प्रबन्ध सम्पादक : पण्डित संजीवकुमार गोधा वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

## महाराष्ट्र एवं मध्यप्रदेश के 12 जिलों में ग्रुप शिविर संपन्न

दिनाँक 12 से 20 जून तक श्रीमती सूरजदेवी धर्मचन्दजी देवड़िया परिवार नागपुर एवं श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन के संयुक्त तत्त्वावधान में सामूहिक शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

**विदर्भ (महाराष्ट्र) के 6 जिलों** - नागपुर, अमरावती, अकोला, वर्धा, यवतमाल, चंद्रपुर तथा **महाकौशल (मध्यप्रदेश) के 6 जिलों** - छिन्दवाड़ा, नरसिंहपुर, होशंगाबाद, बैतूल, सिवनी, जबलपुर में एकसाथ लगाये गये इस शिविर के माध्यम से लगभग 2600 शिविरार्थियों ने अहिंसा-1, अहिंसा-2 की परीक्षा देकर प्रमाण-पत्र प्राप्त किये तथा लगभग 1000 साधर्मियों ने प्रवचनों एवं कक्षाओं के माध्यम से धर्मलाभ लिया। लगभग सभी स्थानों पर श्रुतपंचमी के अवसर पर शास्त्र सज्जा प्रतियोगिता एवं शाकाहार चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

शिविर में **नागपुर (नेहरू पुतला)** में डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, पं. विपिनजी शास्त्री नागपुर, पं. मनीषजी सिद्धांत नागपुर, पं. रवीन्द्रजी महाजन, पं. साकेतजी शास्त्री जयपुर, पं. अभयजी शास्त्री बकस्वाहा, पं. भूषणजी विटालकर शेघाट, पं. निकुंज सिंघई नागपुर, पं. अक्षयजी उभेगांव, विदुषी स्वर्णलताजी मंगलायतन, पं. नीलेशजी एवं पं. केविनजी शाह मुम्बई, **छिन्दवाड़ा** में पं. उत्तमचंदजी सिवनी, पं. नन्दकिशोरजी मांगुलकर काटोल, ब्र.चेतनाबेन देवलाली, पं. विनीतजी शास्त्री ग्वालियर एवं पं. रूपेन्द्रजी जैन छिन्दवाड़ा, **करेली** में पं. कमलेशजी शास्त्री मौ, पं. अगमजी एवं पं. अजयजी कानपुर, **सिवनी** में पं. अनुभव करेली एवं पं. अंशुलजी पारेख दुर्ग, **अकोला** में पं. महावीरजी मांगुलकर कारंजा, पं. दिविजजी सेठी झालरापाटन एवं पं. अनेकांतजी कारंजा, **काटोल** में पं. पंकजजी संगई हिंगोली, **चंद्रपुर** में पं. मधुवनजी मुजफ्फरनगर एवं पं. सुकुमारजी पाटील कोल्हापुर, **होशंगाबाद** में पं. गौरवजी शास्त्री बडौत एवं पं. प्रीतमजी शाह डडूका, **शहपुरा-भिटोनी** में पं. चैतन्यजी शास्त्री एवं पं. आत्मप्रकाशजी शास्त्री खड़ैरी, **उभेगांव** में पं. रतनलालजी होशंगाबाद एवं पं. नवीनजी शास्त्री उज्जैन, **नरसिंहपुर (कंदेली)** में पं. आशीषजी शास्त्री दूनी एवं पं. अपूर्वजी इटावा, **नरसिंहपुर (सिटी)** में पं. वैभवजी शास्त्री, **यवतमाल** में पं. निशांतजी शास्त्री वारासिवनी एवं पं. करन दिगम्बरे कोल्हापुर, **बोरगांव मंजू** में पं. रवीन्द्रजी मसलकर अम्बाड एवं पं. अतीशजी जोगी औरंगाबाद, **मुर्तिजापुर** में पं. निशांत पाटील कोल्हापुर एवं पं. प्रदीपजी धोत्रे कोल्हापुर, **नेरपिंगलई** में पं. नितिनजी शास्त्री इन्दौर एवं पं. आशीषजी महाजन वस्मतनगर, **डोभी** में पं. मयंकजी शास्त्री अमरमऊ एवं पं. अंकुरजी जैन मड़देवरा, **बाबई** में पं. दीपकजी शास्त्री खनियांधाना, **परासिया** में पं. नीरजजी शास्त्री नौगामा एवं पं. अभिषेकजी शास्त्री सिलवानी, **पाँढूर्ना** में पं. पीयूष सिंगतकर चंद्रपुर एवं पं. शुभमजी जैन खनियांधाना, **चिचोली** में पं. सुमितजी शास्त्री उभेगांव एवं पं. अनुरागजी जैन उभेगांव, **चाँद** में पं. आकेशजी जैन उभेगांव, **पिपरिया (इतवारी बाजार)** में पं. शैलेन्द्रजी शास्त्री उदीमोड़, **पिपरिया (तारण-तरण)** में पं. सचिनजी शास्त्री सागर, शैदुरजनाघाट में पं. पवनजी शेंडे शिरपुर, **हिवरखेड** में पं. सूरजजी मगदुम कोल्हापुर, **गणेशपुर** में पं. जयेश रोकड़े मालेगांव, **बरमान** में पं. सनतजी शास्त्री बकस्वाहा एवं पं. निशुजी शास्त्री मड़देवरा, **चांदामेटा** में पं. धवलजी शेठ मुम्बई, **घोड़ाडोंगरी** में पं. प्रतीकजी शास्त्री मुम्बई, आर्वी में पं. शैलेन्द्रजी जैन जयपुर, **चांदुररेलवे** में पं. अतुलजी शास्त्री नौगामा, **जामठी** में पं. संदेशजी बोरालकर कलमनूरी, **शेन्दोला खुर्द** में पं. अक्षयजी वाडकर मिरज, **रामटेक** में विदुषी सुधाबेन उभेगांव एवं विदुषी दीक्षा जैन उभेगांव, पाड़ा में पं. आदेशजी बोरालकर सेनगांव, **मोर्शी** में पं. सतीशजी बोरालकर डोनगांव, **वरुड** में पं. कुलभूषणजी वोकले मालेगांव, **जरुड** में पं. अजयजी गोरे फालेगांव, **नागपुर (तारण-तरण)** में पं. निलयजी शास्त्री बरायठा, पं. पंकजजी शास्त्री बमनी, धरनगांव में पं. विवेकजी गड़ेकर हिवरखेड़, **कुंडा** में पं. सुदीपजी शास्त्री जबेरा एवं करकबेल में पं. आशीषजी शास्त्री सिलवानी, पं. संयमजी शास्त्री सिलवानी के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला। लगभग सभी स्थानों पर रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

दिनाँक 20 जून को **सामूहिक समापन समारोह** की अध्यक्षता डॉ.सुधीरजी सिंघई नरसिंहपुर (संभागीय अध्यक्ष-दि.जैन महासमिति) ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री संजीवजी पाटनी छिन्दवाड़ा, श्री यशवंतजी गोहिल (सहा. आयकर आयुक्त नागपुर), श्री पुरुषोत्तमजी रेड्डी नागपुर, श्री सुभाषजी दिगम्बर होशंगाबाद, श्री नरेशजी सिंघई नागपुर, सौ.बरखा पिंचा आदि महानुभाव मंचासीन थे,

समारोह के अन्त में दीक्षांत उद्बोधन शिविर के निदेशक डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर ने दिया। कार्यक्रम का संचालन कार्यकारी निदेशक पण्डित प्रवेशजी भारिल्ल करेली ने तथा आभार प्रदर्शन पण्डित मनीषजी सिद्धांत ने किया।

शिविर की सफलता में युवा फैडरेशन द्वारा गठित टीम के निदेशक डॉ.राकेशजी शास्त्री नागपुर, पण्डित आलोकजी कारंजा, पण्डित ऋषभजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, पण्डित नंदकिशोरजी मांगुलकर काटोल, पण्डित मनोजजी शास्त्री करेली, पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर, पण्डित स्वप्निलजी शास्त्री नागपुर एवं पण्डित जितेन्द्रजी राठी नागपुर एवं कार्यकारी निदेशक पण्डित प्रवेशजी भारिल्ल करेली थे। इस शिविर के संयोजक विदर्भ विभाग में पण्डित धवलजी गांधी नातेपुते एवं पण्डित पंकजजी दहातोंडे परली तथा महाकौशल विभाग में पण्डित सजलजी शास्त्री सिंगोड़ी एवं पण्डित अंकितजी शास्त्री छिन्दवाड़ा थे। ●

सम्पादकीय –

## पंचास्तिकाय : अनुशीलन

38

ह्न पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

### गाथा– ५७

विगत गाथा ५६वीं गाथा में उदय, उपशम, क्षय, क्षयोपशम और पारिणामिक भावों का संक्षेप में कथन किया है।

प्रस्तुत गाथा में कहा है कि जीव के विभाव भावों का कर्त्ता तो जीव स्वयं है तथा निमित्त द्रव्यकर्म हैं।

मूल गाथा इसप्रकार है ह्न

**कम्मं वेदयमाणो जीवो भावं करेदि जारिसयं।**
**सो तस्स तेण कत्ता हवदि त्ति य सासणे पढिदं।।५७।।**

(हरिगीत)

**पुद्गल करम को वेदते आतम करे जिस भाव को।**
**उस भाव का वह जीव कर्ता कहा जिनवर देव ने।।५७।।**

इस गाथा में आचार्य कुन्दकुन्द कहते हैं कि ह्न कर्म को वेदता हुआ जीव जैसे भावों को करता है, वह उन भावों का उस प्रकार से कर्त्ता है ह्न ऐसा जिन शासन में कहा है।

टीकाकार आचार्य अमृतचन्द कहते हैं कि ह्न वह द्रव्यकर्म जीव द्वारा अनुभव में आता हुआ जीव भावों का निमित्त मात्र कहलाता है।

वह द्रव्यकर्म निमित्त मात्र होने से जीव द्वारा कर्त्तारूप से अपना भाव किया जाता है। इसलिए जीव द्वारा जो भाव जिस प्रकार से किया जाता है, उस भाव का उस प्रकार से वह जीव कर्त्ता है।

कवि हीरानन्दजी काव्य की भाषा में इसी बात को कहते हैं कि ह्न

( दोहा )

**जीव करम–चेतन जबहि जैसा भाव करेइ।**
**तैसा का करता रहै, जिनशासन प्रगटेइ ।।२८२।।**

( सवैया इकतीसा )

**दर्वकर्म चैतै जीव लोकविवहार मांहि,**
**तातैं दर्वकर्म जीव भावौं का निमित्त है।**
**नाना राग–दोष रूप जीवौं के विभाव बढ़ै,**
**ताही का करता जीव जगमांहिं नित्त है।**
**चारि हैं अशुद्धभाव पर के निमित्त सेती,**
**एक परिनामी भाव सदा सुद्ध वित्त है।**
**पर का निमित्त डारि अपना स्वरूप धारि,**
**सुद्ध भाव करता है, सोई समचित्त ।।२८३।।**

( दोहा )

**भाव–करम करता रहै, निहचै जीव असुद्ध।**
**सुद्ध–भाव करतार फुनि, निहचै सुद्ध प्रबुद्ध।।२८४।।**

लोक के व्यवहार में जीवों के द्रव्य कर्म के उदय की मुख्यता से जीव के भावों में द्रव्य कर्मों को निमित्त कहा है। तथा नाना राग–द्वेष के रूप में जो भाव कर्म हैं। जीव उनका कर्त्ता है। जगत में जीव के औदयिक आदि चार अशुद्ध भाव हैं तथा एक परिणामिक भाव शुद्ध है, क्योंकि उसे किसी कर्म की अपेक्षा नहीं हैं। पर के निमित्त को जलाकर अपने स्वरूप को धारण कर जीव शुद्ध भाव करके समकित होता है, वीतरागी होता है।

भावार्थ यह है कि ह्न इस संसारी जीव के अनादिकाल से द्रव्यकर्म का सम्बन्ध है। वह जीव व्यवहारनय से उस द्रव्यकर्म का भोक्ता है। जीव जब जिस द्रव्य कर्म को भोगता है, तब उस ही द्रव्यकर्म का निमित्त पाकर उस जीव के जो जीव चिद्विकार होते हैं, वही चिद्विकार रूप परिणाम जीव का कार्य है। इस कारण भाव कर्मों का कर्त्ता आत्मा कहा जाता है। इससे यह सिद्ध हुआ कि जिन भावों से आत्मा परिणमित होता है, उन भावों का कर्त्ता होता है।

इस सम्बन्ध में श्रीकानजीस्वामी कहते हैं कि संसारी जीवों के द्रव्य कर्मों का अनादि से सम्बन्ध है। वे संसारी जीव कर्म के उदय के समय हर्ष–शोक के परिणाम करते हैं, कर्म को भोगते हैं ह्न ऐसा कहा जाता है जैसे कि जब जीव रोटी–दाल, भात का उपभोग करते हैं तब उस प्रकार के विकारी परिणामों को जीव भोगते हैं। यह अशुद्ध निश्चयनय का कथन है तथा उसमें वे संयोगी पर पदार्थ निमित्त हैं, इसलिए पदार्थों को भोगते हैं। ऐसा व्यवहार से कहने में आता है।

इसीप्रकार जीव हर्ष–शोक को भोगता है, यह निश्चय है तथा कर्म को भोगता है, यह उपचार कथन है।

तात्पर्य यह है कि कर्म जीव में राग की प्रेरणा कराता नहीं है अर्थात् कर्म के उदय प्रमाण भाव नहीं होते, किन्तु अपनी तत्समय की योग्यता से जैसे अपने परिणाम हों, उन्हीं परिणामों का कर्त्ता जीव होता है। स्वभावकर्त्ता तो जीव है, किन्तु विकार भी स्वतंत्रपने करता है, किन्तु वह विकार जीव का स्वरूप नहीं है। त्रिकाली शुद्ध स्वरूप ही आत्मा का वास्तविक स्वरूप है ह्न ऐसा समझकर उस शुद्ध आत्मा को ही उपादेय मानकर यथार्थ दृष्टिवंत को ही धर्म होता है। ऐसा भगवान के मत में तत्त्व के जानकार पुरुष कहते हैं।

इसीप्रकार जीव हर्ष–शोक को भोगता है, यह निश्चय है तथा कर्म को भोगता है, यह उपचार कथन है। •

### गाथा– ५८

विगत गाथा ५७वीं गाथा में कहा गया है कि कर्म को वेदता हुआ जीव जैसे भाव करता है वह उस भाव का उस प्रकार से कर्त्ता है।

अब प्रस्तुत ५८वीं गाथा में कहते हैं कि ह्न कर्म बिना जीव के उदय, उपशम क्षय और क्षयोपशम नहीं होते। इसलिए ये चारों जीवभाव कर्म कृत हैं।

मूल गाथा इसप्रकार है ह्न

**कम्मेण बिणा उदयं जीवस्स ण विज्जदे उवसमं वा।**
**खइयं खओवसमियं तम्हा भावं तु कम्मकदं ।।५८।।**

(हरिगीत)

**पुद्गलकरम विन जीव के उदयादि भाव होते नहीं।**
**इससे करम कृत कहा उनको वे जीव के निजभाव हैं।।58।।**

यहाँ आचार्य कुन्दकुन्द कहते हैं कि ह्न कर्म बिना जीव को उदय, उपशम, क्षायिक और क्षायोपशमिक भाव नहीं होते। इसलिए ये चारों ही भाव कर्मकृत हैं।

आचार्य अमृतचन्द्र समय व्याख्या टीका में कहते हैं कि ह्न यहाँ निमित्त मात्र होने से द्रव्य कर्मों को औदयिकादि भावों का कर्त्तापना कहा है, क्योंकि द्रव्य कर्मों के बिना जीव को औदयिक आदि चार भाव नहीं होते। इसलिए क्षायिक, क्षायोपशमिक, औदयिक तथा औपशमिक भावों को कर्मकृत संमत करना। पारिणामिक भाव तो अनादि–अनंत निरुपाधिक –स्वाभाविक ही है।

यहाँ यह **प्रश्न** संभव है कि ह्न क्षायिक व उपशम को कर्मकृत किस अपेक्षा से कहा?

**समाधान** यह है कि ह्न क्षायिक भाव भी तो कर्मक्षय द्वारा होता है, इसलिए कर्मकृत हैं तथा औपशमिकभाव कर्म के उपशम उत्पन्न होने के कारण कर्मकृत ही हैं। इस कारण इन्हें भी कर्मकृत मानना योग्य है।

कवि हीरानन्दजी इन्हीं भावों को काव्य में इसप्रकार कहते हैं ह्न

( दोहा )

**करम बिना ए होहिं नहिं, उदय और उपसंत।**
**छयोपशम–क्षय जीव कै, तातैं करम करंत।।२८५।।**

( सवैया इकतीसा )

**करम बिना जीवौं कै उदय औ औपशम,**
**क्षय औ छयोपसम कहौ कैसैं मानिए।**
**तातैं च्यारौं एई दर्व कर्म की अवस्थारूप,**
**सुद्ध परिनामवस्था जीव की बखानिए।।**
**इनहीं अवस्था माहिं, जीव–परिनाम जोई,**
**सोई भाव कर्मरूप चारौं भेद ठानिए।**
**यातैं दर्व कर्म रूप, हेत भावकर्म का है,**
**असद्भूत नय तातैं, जग माहिं जानिए।।२८६।।**

( चौपाई )

**परिणामिक निरुपाधि कहावै, स्वाभाविक सहभाव दिखावै।**
**लसै अनादि–अनन्त दरवकै, निज परिनाम सरूप सरवकै।।२८७।।**
**छायिकभाव करमकै खयतैं सादि अनंत सुभाव अखय तै।**
**कर्म उदै जब उपसम पावै, तब औपशमिकभाव कहावै।।२८८।।**
**ऐसैं करम उदैतैं जानौ, भाव प्रगट औदयिक बखानौ।**
**छय–उपसम फुनि याही विधि है, उदयाभाव समन परिसिध है।।२८९।।**
**तातैं करम किये यौं मानी, करम निमित्त लसै परधानी।**
**असद्भुत यहु नय विस्तारा, जानहु जिनवाणी करि सारा।।२९०।।**

( दोहा )

**इनमैं छायिक भाव जो, सादि अनंत कहाय।**
**सोई सम्यकवंत कौ, उपादेय दिखराय।।२९१।।**

जीव के उदय, उपशम, क्षय एवं क्षयोपशम ह्न ये चारों भाव करम के बिना नहीं होते, इसलिए ये चारों भाव द्रव्य कर्म की अवस्थारूप हो गये हैं। तथा शुद्ध पारिणामिक भाव जीव की अवस्था है।

ये सारे भाव द्रव्य कर्म के हेतु रूप असद्भूतनय से जीव के कहे गये हैं। यह पारिणामिक भाव निरूपाधिक है, अनादि–अनंत है। शेष चार भावों में क्षायिक भाव मोह कर्मों के क्षय से सादि–अनन्त है। कर्म के उपशम से औपशमिक, कर्मों से उदय से औदयिक भाव नाम पाते हैं। यह सब असद्भूतनय का विस्तार है इनमें एक क्षायिकभाव ही सादि–अनन्त है और उपादेय है।

इसी भाव को स्पष्ट करते हुए श्री कानजीस्वामी कहते हैं कि ह्न इस गाथा में कहा है कि ह्न जीव को रागद्वेष आदि परिणामों का कर्त्ता व्यवहारनय से कहा है। कर्म में भी उदय, उपशम, क्षयोपशम व क्षय अवस्थायें होती हैं। द्रव्य कर्म अपनी शक्ति से उस भावरूप परिणमन करते हैं। आत्मा उनका निमित्त पाकर उन पर लक्ष्य कर स्वयं अपने राग–द्वेषरूप परिणाम करता है। निमित्त करवाता नहीं है, बल्कि जीव निमित्त पर लक्ष्य करके स्वयं उसरूप परिणमित करता है। निमित्त–नैमित्तिक में समय भेद नहीं है। यहाँ उक्त चार भावों का कर्त्ता जीव को व्यवहारनय से नय कहा गया है ह्न ऐसा जानना।

इसप्रकार कहने का तात्पर्य यह है कि आत्मा के भाव कर्म द्रव्यकर्म कृत हैं। आत्मा तो अपने भाव छोड़कर अन्य कुछ भी नहीं करता। ●

## श्रुतपंचमी पर्व मनाया

**जयपुर (राज.) :** यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनाँक १६ जून को टोडरमल वीतराग–विज्ञान महिला मण्डल जयपुर द्वारा श्रुतपंचमी पर्व विविध कार्यक्रमों के साथ संपन्न हुआ।

इस अवसर पर प्रात: त्रिमूर्ति जिनमंदिर में सामूहिक श्रुत पूजन के पश्चात् पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल का मार्मिक प्रवचन हुआ। सायंकाल श्रुतपंचमी पर महिलाओं के अनेक वक्तव्य हुये, जिसमें श्रुतपंचमी पर्व की महिमा का उल्लेख करते हुये नियमित स्वाध्याय की प्रेरणा दी गई।

कार्यक्रम में पण्डित अनिलकुमारजी शास्त्री ने अपनी पुत्री के जन्मोत्सव पर **जान रहा हूँ देख रहा हूँ** पुस्तक वितरित की।

**श्री दि. जैन तेरहपंथी बड़ा मंदिर,** जौहरी बाजार में इस अवसर पर प्रात: श्रुतपूजन के उपरान्त पण्डित संजीवकुमारजी गोधा के श्रुतपंचमी पर प्रासंगिक प्रवचन का लाभ मिला।

# नवीन प्रवेश प्रारंभ

पत्राचार द्वारा जैनदर्शन के विधिवत् अध्ययन हेतु श्री टोडरमल मुक्त विद्यापीठ की स्थापना की गयी है। इसके चतुर्थ सत्र-२०१० हेतु प्रवेश प्रक्रिया प्रारंभ हो चुकी है। प्रवेश हेतु आवेदन-पत्र जयपुर कार्यालय में पत्र लिखकर मंगा सकते हैं। आवेदन-पत्र भरकर भेजने की अंतिम तिथि 31 जुलाई, 2010 तक है। इसके द्वारा निम्नानुसार पाठ्यक्रम चलाये जा रहे हैं।

## 1. द्विवर्षीय विशारद परीक्षा

यह पाठ्यक्रम श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय द्वारा उपाध्याय वर्ग के लिए निश्चित पाठ्यक्रम के अनुरूप दो वर्ष का है जिसमें छः-छः महीने सेमेस्टर के अनुसार पाठ्यक्रम प्रतिवर्ष दो भागों में विभाजित हैं। जिसकी परीक्षा प्रतिवर्ष दिसम्बर माह व जून में होगी। चूंकि छात्र का नामांकन दो वर्ष के लिए होगा; अतः परीक्षार्थी को दोनों वर्षों की फीस 200/- रु. एक साथ भेजनी हैं। पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु न्यूनतम आयु ह्न 15 वर्ष एवं शैक्षणिक योग्यता 10 वीं उत्तीर्ण है।

पाठ्यक्रम में अध्ययन हेतु निर्धारित ग्रन्थ (प्रश्न पत्र योजना सहित) निम्नानुसार है ह्न

**प्रथम वर्ष (उपाध्याय कनिष्ठ) :ह्न**

**प्रथम सेमेस्टर** : प्रथम प्रश्नपत्र : वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-1
द्वितीय प्रश्नपत्र : छहढाला (70 अंक) +
सत्य की खोज (30 अंक)

**द्वितीय सेमेस्टर** : प्रथम प्रश्नपत्र : वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-2
द्वितीय प्रश्नपत्र:वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-3

**द्वितीय वर्ष (उपाध्याय वरिष्ठ ) :ह्न**

**प्रथम सेमेस्टर** : प्रथम प्रश्नपत्र : तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-1
द्वितीय प्रश्नपत्र : लघु जैन सिद्धान्त प्रवेशिका

**द्वितीय सेमेस्टर** : प्रथम प्रश्नपत्र : तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-2
द्वितीय प्रश्नपत्र : धर्म के दशलक्षण (70 अंक)+
भक्तामर स्तोत्र (30 अंक)

## 2. त्रिवर्षीय सिद्धान्त विशारद परीक्षा

यह पाठ्यक्रम श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय द्वारा शास्त्री वर्ग के लिए निश्चित पाठ्यक्रम के अनुरूप तीन वर्ष का है। छः-छः महीने के सेमेस्टर आधार से पाठ्यक्रम को प्रतिवर्ष दो भागों में विभाजित किया गया है। इसमें प्रवेश हेतु अभ्यार्थी का द्विवर्षीय विशारद उत्तीर्ण होना अनिवार्य है तथा इससे नवीन नामांकन की आवश्यकता नहीं होगी; चूंकि इस पाठ्यक्रम में प्रवेश तीन वर्षों के लिए है; अतः इसकी फीस 300/- रुपये एक साथ जमा करानी है। पाठ्यक्रम में अध्ययन हेतु निर्धारित ग्रन्थ (प्रश्न पत्र योजना सहित) निम्नानुसार है ह्न

**प्रथम वर्ष (प्रथम सेमेस्टर)** : प्रथम पत्र : गुणस्थान विवेचन
द्वितीय पत्र : क्रमबद्धपर्याय (70 अंक)+
सामान्य श्रावकाचार(30 अंक)

**प्रथम वर्ष (द्वितीय सेमेस्टर)** : प्रथम पत्र : रत्नकरण्डश्रावकाचार
(केवल श्लोकार्थ) 150 श्लोक
द्वितीय पत्र : रामकहानी (70 अंक) +
आप कुछ भी कहो (30 अंक)।

**द्वितीय वर्ष (प्रथम सेमेस्टर)** : प्रथम पत्र :
समयसार ह्न पूर्व रंग से जीवाजीवाधिकार तक
(समयसार अनुशीलन भाग-1)
द्वितीय पत्र : गोम्मटसार कर्मकाण्ड (प्रथम अध्याय)

**द्वितीय वर्ष (द्वितीय सेमेस्टर) :** प्रथम पत्र : मोक्षमार्गप्रकाशक
(एक से चार अधिकार)
द्वितीय पत्र : परम भाव प्रकाशक नयचक्र
(निश्चय व्यवहार प्रकरण)
तृतीय पत्र : हरिवंशकथा (70 अंक)+
भ.महावीर और सर्वोदय तीर्थ (30 अंक)

**तृतीय वर्ष (प्रथम सेमेस्टर)** : प्रथम पत्र : समयसार ह्न कर्त्ताकर्मअधिकार
(समयसार अनुशीलन भाग-2)
द्वितीय पत्र : गोम्मटसार जीवकाण्ड गाथा 70 से 215
(गाथा 97 से 112 तक की गाथा छोड़कर)

**तृतीय वर्ष (द्वितीय सेमेस्टर) :** प्रथम पत्र : मोक्षमार्गप्रकाशक
(छह से नौ अधिकार)
द्वितीय पत्र : परमभाव प्रकाशक नयचक्र (उत्तरार्द्ध)
तृतीय पत्र : शलाका पुरुष (पूर्वार्ध एवं उत्तरार्ध)

# तृतीय बाल संस्कार शिविर संपन्न

**द्रोणगिरि (म.प्र.) :** यहाँ दिनाँक ९ से १६ जून तक श्री गुरुदत्त कुन्दकुन्द कहान दि. जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट द्वारा तृतीय बाल संस्कार शिविर आयोजित किया गया।

शिविर का उद्घाटन डॉ. अशोकजी जैन इन्दौर ने एवं ध्वजारोहण श्री प्रसन्नकुमारजी जैन जबलपुर ने किया। शिविर में पण्डित कोमलचंदजी टडा, पण्डित राजकुमारजी बांसवाड़ा, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित मनीषजी शास्त्री खतौली, पण्डित आशीषजी शास्त्री टीकमगढ, पण्डित संजयजी शास्त्री जयपुर, पण्डित निलयजी शास्त्री टीकमगढ, पण्डित विशेषजी शास्त्री बड़ामलहरा, पण्डित स्वतंत्रजी शास्त्री खरगापुर, पण्डित विश्वासजी शास्त्री बडामलहरा, डॉ.ममता जैन बांसवाड़ा एवं श्रीमती रागिनी जैन टीकमगढ का प्रवचनों एवं कक्षाओं के माध्यम से लाभ मिला।

इस अवसर पर शिशुवर्ग, बालवर्ग एवं किशोरवर्ग - इस प्रकार तीन वर्गों की कक्षाओं का आयोजन किया गया, जिसके माध्यम से टीकमगढ, छतरपुर, दमोह एवं सागर जिले के ३०२ बच्चों ने धर्मलाभ लिया। इस अवसर पर सिद्धायतन के नवीन-सत्र हेतु प्रवेश परीक्षा भी आयोजित की गई। ज्ञातव्य है कि सिद्धायतन में इस वर्ष कक्षा दसवीं का परीक्षा परिणाम शत-प्रतिशत रहा। कक्षा दसवीं में कपिल जैन ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

## श्री लघुगोम्मटसार विधान सम्पन्न

**खतौली–मुजफ्फरनगर (उ.प्र.) :** यहाँ दिनाँक १४ से १६ जून तक श्री लघु गोम्मटसार विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात: ऐलाचार्य १०८ श्री क्षमाभूषणजी महाराज के तथा रात्रि में पण्डित राकेशजी शास्त्री दिल्ली के प्रवचनों का आयोजन किया गया। इनके अतिरिक्त पण्डित विवेकजी शास्त्री, श्री अक्षयजी मंगलार्थी, कु.श्रुति शास्त्री एवं कु.ईर्या शास्त्री के प्रवचनों एवं कक्षाओं का भी लाभ मिला।

मंगल कलश स्थापना श्री कमलजी जैन परिवार द्वारा की गई। ध्वजारोहण श्री नरेन्द्रजी जैन सर्राफ ने तथा विधान मण्डप का उद्‌घाटन श्री अमरचंदजी जैन सर्राफ ने किया।

दिनाँक १६ जून को विशाल पालकी यात्रा द्वारा जिनवाणी शोभायात्रा निकाली गई, जिसमें सैंकड़ों लोग भक्तिभावपूर्वक सम्मिलित हुये।

विधि–विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित सोनूजी शास्त्री जयपुर ने संपन्न कराये। **– कल्पेन्द्र जैन**

## भगवान बाहुबली की प्रतिमा का भव्य स्वागत

**बडोदरा (गुज.) :** श्री कुन्दकुन्द कहान दि.जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट, सोनगढ द्वारा प्रस्तावित जंबूद्वीप संकुल में स्थापित होने वाली भगवान बाहुबली की ४१ फीट ऊँची एवं २०० टन वजन वाली प्रतिमा बैंगलोर के पास से बनकर १४० पहियों वाले विशेष ट्रेलर द्वारा सोनगढ जा रही है। रास्ते में पूना (महा.) के अतिरिक्त बड़ोदरा (गुज.) नगर में दिनांक ६ जून को इस अतिभव्य प्रतिमा का भव्य स्वागत समस्त जैन बन्धुओं द्वारा किया गया।

इस अवसर पर सैंकड़ों साधर्मी भाई–बहनों ने समारोह स्थल पर वेदी में प्रतिमा विराजमान कर देव–शास्त्र–गुरु एवं भगवान बाहुबली की सामूहिक पूजन की। पूजन के पश्चात् मंगलाष्टक के पवित्र उच्चारण के साथ हजारों जैन–अजैन लोगों ने ४१ फीट उन्नत भगवान बाहुबली मूर्ति का स्वागत किया। इस अवसर पर श्री दीपकभाई, श्री जीगेशभाई, श्रीमती दीप्तीबेन, कु.भूमि, श्रीमती कल्पना देसाई बडोदरा ने भक्ति के माध्यम से लोगों में उल्लास भर दिया।

इस कार्यक्रम में बडोदरा ही नहीं अपितु मुम्बई, अहमदाबाद, राजकोट, दाहोद, सुरेन्द्रनगर, हिम्मतनगर, तलोद, बोरसद आदि अनेक नगरों से मुमुक्षु भाई–बहन पधारे।

इस अवसर पर सोनगढ स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री राजूभाई कामदार, दि.जैन महासमिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री विजयजी जैन (लुहाड़िया), चैतन्यधाम के अध्यक्ष श्री अमृतभाई मेहता, श्री गुजराती दि.जैन महासंघ मध्य गुजरात जोन के गवर्नर श्री महेशभाई शाह, बडोदरा के विधायक श्री योगेशजी पटेल, विधायक श्री भूपेन्द्रजी लाखावाला, विपक्ष के नेता श्री चिरागजी जवेरी एवं कई अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। श्री अजितजी जैन के नेतृत्व में बडोदरा के सभी दि.जैन मंदिर, युवक मण्डल, महिला मण्डल एवं अन्य संस्थाओं ने मिलकर इस कार्यक्रम को सफल बनाया।

## श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड
### श्री टोडरमल स्मारक भवन

ए–4, बापूनगर, जयपुर – 302015 (राजस्थान)

### ग्रीष्मकालीन परीक्षा कार्यक्रम सत्र–2010

| दिन व दिनांक | नाम ग्रन्थ |
|---|---|
| गुरुवार 19 अगस्त 2010 | 1. बालबोध पाठमाला भाग–1 (बा.प्रथम खण्ड) मौखिक<br>2. जैन बालपोथी भाग–1 (मौखिक)<br>3. वीतराग–विज्ञान पाठमाला भाग–1(प्रवेशिका प्रथम खण्ड)<br>4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग–1<br>5. छहढाला (पूर्ण)<br>6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) पूर्वार्द्ध<br>7. मोक्षमार्गप्रकाशक (पूर्वार्द्ध)<br>8. जैन सिद्धान्त प्रवेशिका (गोपालदासजी बरैया कृत)<br>9. विशारद प्रथम खण्ड (प्रथम वर्ष) |
| शुक्रवार 20 अगस्त 2010 | 1. बालबोध पाठमाला भाग–2 (बा.द्वितीय खण्ड) मौखिक<br>2. जैन बालपोथी भाग–2 (मौखिक)<br>3. वीतराग–विज्ञान पाठमाला भाग 2(प्रवेशिका द्वितीयखण्ड)<br>4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग–2<br>5. द्रव्यसंग्रह (पूर्ण)<br>6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) उत्तरार्द्ध<br>7. लघु जैनसिद्धान्त प्रवेशिका (सोनगढ़)<br>8. मोक्षमार्गप्रकाशक (उत्तरार्द्ध)<br>9. विशारद प्रथम खण्ड (द्वितीय वर्ष)<br>10. विशारद द्वितीय खण्ड (प्रथम वर्ष) |
| शनिवार 21 अगस्त 2010 | 1. बालबोध पाठमाला भाग–3 (बा.तृतीय खण्ड) मौखिक<br>2. वीतराग–विज्ञान पाठमाला भाग–3 (प्रवेशिका तृतीय खण्ड)<br>3. रत्नकरण्डश्रावकाचार (पूर्ण)<br>4. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय (पूर्ण)<br>5. विशारद द्वितीय खण्ड (द्वितीय वर्ष) |

**नोट –** (1) सुविधानुसार परीक्षा का समय सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक के बीच में कभी भी सैट किया जा सकता है।

(2) जहाँ एक से अधिक केन्द्र हों, वे आपस में मिलकर समय निश्चित करें।

(3) यदि किन्हीं विषयों के छात्र आपस में टकराते हों तो परीक्षा सुविधानुसार दिन में दो बार ली जा सकती है।

(4) बालबोध पाठमाला भाग 1, 2, 3 और जैन बालपोथी भाग 1 व 2 की परीक्षायें मौखिक लेवें। शेष सभी विषयों की परीक्षायें लिखित में लेवें।

**ह्र ओमप्रकाश आचार्य (प्रबंधक ह्र परीक्षा बोर्ड)**

# मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार

## 55 चौदहवाँ प्रवचन

- डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

**(गतांक से आगे...)**

अबद्ध की अपेक्षा मात्र इतनी ही है कि आत्मा कर्मरूप नहीं हुआ और कर्म आत्मारूप नहीं हुए; आत्मा शरीररूप नहीं हुआ और शरीर आत्मारूप नहीं हुआ। कर्म और शरीर अजीव ही रहे, जीव से बंधकर जीव नहीं हो गये। इसीप्रकार आत्मा अजीव कर्मों से बंधकर, अजीव शरीर में रहकर भी अजीव नहीं हो गया, जीव ही रहा।

यही बात समयसार में सर्वविशुद्धज्ञानाधिकार में गाथा ३०८ से ३११ तक की गाथाओं में आत्मख्याति टीका की आरंभिक पंक्तियों में कहा है; जो इसप्रकार है ह्न

**''जीवो हि तावत्क्रमनियमितात्मपरिणामैरुत्पद्यमानो जीव एव, नाजीवः, एवमजीवोऽपि क्रमनियमितात्मपरिणामैरुत्पद्य-मानोऽजीव एव, न जीवः; सर्वद्रव्याणां स्वपरिणामैः सह तादात्म्यात् कङ्कणादिपरिणामैः काञ्चनवत्।**

**प्रथम तो यह जीव क्रमनियमित अपने परिणामों से उत्पन्न होता हुआ जीव ही है, अजीव नहीं; इसीप्रकार अजीव भी क्रमनियमित अपने परिणामों से उत्पन्न होता हुआ अजीव ही है, जीव नहीं; क्योंकि जिसप्रकार सुवर्ण का कंकण आदि परिणामों के साथ तादात्म्य है; उसीप्रकार सर्व द्रव्यों का अपने-अपने परिणामों के साथ तादात्म्य है।''**

देखो यहाँ इतनी सी बात है कि जीव जीव रहा और अजीव अजीव रहा। ज्ञान और आत्मा में जैसा तादात्म्यसंबंध है, वैसा कर्म और आत्मा में नहीं है, शरीर और आत्मा में नहीं है। बस बात इतनी सी है।

यहाँ दो द्रव्यों में भिन्नता के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है।

उक्त अपेक्षा ख्याल में न आने से निश्चयाभासी कहता है कि हमें बंध और मुक्ति के विकल्प में ही नहीं उलझना है; क्योंकि योगसार में लिखा है कि ह्न

**जइ बद्धउ मुक्कउ मुणहि जो बंधयहि णिभंतु।**
**सहज-सरूवइ जइ रमहि तो पावहि सिव संतु।।87।।**

( हरिगीत )

**यदि बद्ध और अबद्ध माने बंधेगा निर्भ्रान्त ही।**
**जो रमेगा सहजात्म में तो पायेगा शिव शान्ति ही।।87।।**

यदि तू बन्ध-मोक्ष की कल्पना करेगा तो निःसन्देह तू बंधेगा, यदि तू सहजस्वरूप में रमण करेगा तो शान्तस्वरूप मोक्ष को पावेगा।

**उक्त कथन को आधार बनाकर निश्चयाभासी कहते हैं कि हमें तो कोई विकल्प करना ही नहीं है, बंध-मोक्षसंबंधी चिन्तन करना ही नहीं है, आत्मा के बंधन की और छूटने की बात ही नहीं करनी है, हमें तो आत्मा को छोड़कर अन्य कुछ सुनना भी अच्छा नहीं लगता।**

कुछ लोग कहते हैं कि हमें तो पर को जानना ही नहीं है; क्योंकि आत्मा पर को जानता ही नहीं है।

जब आत्मा पर को जानता ही नहीं है तो फिर पर को जानने या नहीं जानने की बात ही कैसे हो सकती है ?

आप तो दोनों बातें एकसाथ कहते हैं कि आत्मा पर को जानता ही नहीं है; इसलिए हमें पर को नहीं जानना है।

इसमें आपको कुछ अटपटा नहीं लगता ?

यदि उक्त संदर्भ में कुछ कहो तो छूटते ही कहते हैं कि तुम्हें पर को जानने का बहुत रस है। क्या तुम यह नहीं जानते कि पर को जानने का रस जिसे होता है, वह सीधे निगोद जाता है।

वे लोगों को बात-बात में निगोद भेज देते हैं।

**मैं आपसे ही पूछता हूँ कि आत्मा स्व-परप्रकाशक है ह्न इस बात की चर्चा करना, इस बात का निर्णय करने का भाव क्या पर को जानने का रस है और क्या इसका फल निगोद है ?**

पर उन्हें कौन समझाये ? वे तो अपनी धुन में ही मस्त रहते हैं।

जो भी हो, इसीप्रकार ये निश्चयाभासी कहते हैं कि हमें बंधन की चर्चा ही नहीं करनी है; क्योंकि बंध की कथा ही विसंवाद पैदा करनेवाली है।

अरे, भाई ! **चर्चा नहीं करने से क्या तथ्य बदल जायेंगे ?** निश्चयनय के उक्त कथन के आधार पर यदि तुम बंध-मोक्ष से इन्कार करोगे तो संसार और मोक्ष हैं ही नहीं ह्न ऐसा मानना पड़ेगा। संसार के नहीं रहने पर चार गतियाँ भी नहीं रहेंगी, स्वर्ग-नरक भी नहीं रहेंगे।

क्या ये स्वर्ग-नरक और चार गतियाँ काल्पनिक हैं, क्या इनका अस्तित्व है ही नहीं ? शास्त्रों में तो इनकी चर्चा बहुत विस्तार से प्राप्त होती है। क्या ये बातें सर्वज्ञ भगवान की वाणी में नहीं आई हैं ?

यदि आई है तो फिर तुम इनके अस्तित्व से इन्कार क्यों करते हो ?

इसपर वे कहते हैं कि हम नहीं मानते ऐसी बातों को।

**अरे, भाई ! तुम्हारे मानने या नहीं मानने से क्या होता है ? यदि तुम चारों अनुयोगों में प्राप्त निश्चय-व्यवहार के कथनों को स्वीकार नहीं करोगे तो फिर चौबीस तीर्थंकरों और बारह चक्रवर्तियों को मानना भी संभव न होगा, स्वर्ग-नरक को मानना भी संभव न होगा।**

क्या आपको ध्यान है कि आपने शास्त्रों के आधार से क्या-क्या मान रखा है ? अतः ऐसी बातें बंद करो और तत्त्वार्थों के निर्णय करने के लिए जिनागम का अभ्यास करो और जिनागम के विभिन्न अपेक्षाओं से किये गये सभी कथनों को नयविभाग से समझो।

उक्त कथन का भाव स्पष्ट करते हुए पण्डितजी लिखते हैं ह्न

**''जो जीव केवल पर्यायदृष्टि होकर बन्ध-मुक्त अवस्था ही को मानते हैं, द्रव्यस्वभाव का ग्रहण नहीं करते; उन्हें ऐसा उपदेश दिया है कि द्रव्यस्वभाव को न जानता हुआ जो जीव बंधा-मुक्त हुआ मानता है; वह बंधता है।**

**तथा यदि सर्वथा ही बन्ध-मुक्ति न हो तो वह जीव बंधता है**

**ह्न ऐसा क्यों कहें तथा बन्ध के नाश का, मुक्त होने का उद्यम किसलिए किया जाये और आत्मानुभव भी किसलिए किया जाये?**

**इसलिए द्रव्यदृष्टि से एक दशा है और पर्यायदृष्टि से अनेक अवस्थाएँ होती हैं ह्न ऐसा मानना योग्य है।[१]''**

भक्तामर के लेखक आचार्य मानतुंग को राजा ने लोह की सांकलों से जकड़ कर कारागृह (जेल) में डाल दिया।

ऐसी स्थिति में आचार्य श्रीमानतुंग सोचते हैं कि मैं जेल में कहाँ हूँ, मैं तो अपने में हूँ। इन हथकड़ियों, बेड़ियों का बंधन तो देह में है, मुझमें नहीं। जबकि मैं देह से जुदा हूँ तो फिर मुझे बंधन कहाँ है ?

मेरे लिए तो देह भी जेल है। राजा ने तो मेरी देह को जेल में डालकर जेल को ही जेल में डाला है। राजा साहब मुझे जानते ही कहाँ हैं ?

**यदि वे मुझे जानते होते तो उन्हें मुझे जेल में डालने का नहीं, नमस्कार करने का भाव आता। वे तो मुझे न द्रव्य की अपेक्षा जानते हैं और न पर्याय की अपेक्षा; क्योंकि द्रव्य की अपेक्षा तो मैं बंधन और मुक्ति से पार तत्त्व हूँ और पर्याय की अपेक्षा छटवें-सातवें गुणस्थान की भूमिका में हूँ। दोनों ही स्थिति में वंदना करने योग्य हूँ, बंधन में डालने के योग्य नहीं।**

**जेल में देह है, मैं नहीं; बंधन में भी देह है, मैं नहीं; क्योंकि मैं तो निर्बंध तत्त्व हूँ।**

क्या आचार्यदेव का यह सोचना गलत है ? यदि नहीं ! तो फिर क्या वे यह नहीं जानते थे कि मैं इस समय कहीं आ जा नहीं सकता ?

वर्तमान पर्याय में जो बंधन है, उसकी भी स्वीकृति उन्हें थी; पर उनकी दृष्टि में यह क्षणिक पर्याय उनकी नहीं थी, उनके ध्यान का ध्येय बंधन नहीं बन रहा था, अपितु आत्मा का अबंधस्वभाव ही था।

**अबंध स्वभाव में अपनापन होने और उसमें ही उपयोग के स्थिर होने से तो संसार के बंधन भी समाप्त हो जाते हैं, कर्म की बेड़ियाँ भी टूट जाती हैं और आत्मा इस सांसारिक बंधन से मुक्त हो जाता है तो फिर जेल के इस बाह्य बंधन के बारे में क्या बात करें?**

आचार्यश्री तो विकार के बंधनों में से मुक्त होने के पुरुषार्थ में संलग्न थे। जेल के बंधन के बारे में उन्हें कुछ सोचने-समझने की फुरसत ही नहीं थी।

**आचार्यश्री की निर्मल दृष्टि में तो बंधन की स्वीकृतिपूर्वक बंधन से इन्कार था; पर यह निश्चयाभासी बंधन को तो स्वीकार नहीं करता और स्वयं को बंधन और मुक्ति से रहित मानकर स्वच्छन्द हो जाता है, निरुद्यमी हो जाता है, पुरुषार्थहीन हो जाता है, स्वाध्याय आदि सत् क्रियाओं से विरत हो जाता है।**

**आचार्यश्री के उक्त चिन्तन में ऐसा नहीं आया कि शरीर बंधा नहीं है; परन्तु ऐसा आया कि शरीर बंधन में है, पर मैं शरीर नहीं हूँ, इसलिए मैं अबंध हूँ।**

स्वयं को अबंध मानकर वे जेल में से बाहर जाने का प्रयत्न नहीं करते; क्योंकि वे जानते हैं कि इस स्थिति में बाहर जाना संभव नहीं है; पर बात यह है कि उन्हें जाना ही नहीं है, वे तो अपने में हैं और उन्हें निरन्तर अपने में ही रहना है।

जिसे कहीं जाना ही न हो, उस पर बाहर नहीं जाने संबंधी प्रतिबंध का क्या अर्थ रह जाता है ? राजा कहे कि आप बाहर नहीं जा सकते; पर उन पर इसका कोई प्रभाव नहीं है; क्योंकि उन्हें बाहर जाना ही नहीं है।

बाहर है भी क्या, उनका तो सबकुछ उनके ही भीतर है, वे तो उसी में मग्न हैं, उन्हें बाहर आना-जाना अच्छा ही नहीं लगता। वे तो स्वयं में रहकर भी सबकुछ जान रहे हैं, देख रहे हैं और अपने ज्ञाता-दृष्टास्वभाव में मग्न हैं।

निष्कर्ष के रूप में पण्डित टोडरमलजी कहते हैं कि जिनवाणी में अनेक प्रकार के नयों की अपेक्षा से विभिन्न प्रकार के कथन पाये जाते हैं; उनमें से अपनी रुचि के अनुसार निश्चयनय की मुख्यता से जो कथन किये गये हों, एकान्त से उन्हीं को पकड़कर ये निश्चयाभासी लोग अपनी मिथ्या मान्यताओं का पोषण करते रहते हैं।

उनकी वृत्ति का चित्रण करते हुए पण्डितजी कहते हैं कि जिनवाणी में तो सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र की एकता को मोक्षमार्ग कहा है।

**सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान के लिए सात तत्त्वों का ज्ञान-श्रद्धान होना चाहिए और सम्यक्चारित्र के लिए रागादिक दूर करने का प्रयत्न होना चाहिए; इसके लिए न तो इनके तत्त्वविचार में प्रवृत्ति है और न रागादिक दूर करने का उद्यम दिखाई देता है। ये लोग तो एकमात्र अपने आत्मा के शुद्ध अनुभवन को ही मोक्षमार्ग मानकर संतुष्ट हैं।**

आत्मानुभव की प्राप्ति के लिए अंतरंग में ऐसा चिन्तवन करते रहते हैं कि **'मैं सिद्ध समान शुद्ध हूँ, केवलज्ञानादि से सहित हूँ, द्रव्यकर्म-नोकर्म से रहित हूँ, परमानन्दमय हूँ, जन्म-मरणादि दुखों से रहित हूँ।'**

उक्त मान्यतावाले निश्चयाभासियों के समक्ष पण्डित टोडरमलजी प्रश्नों की झड़ी लगा देते हैं। कहते हैं कि तुम्हारा यह चिन्तवन द्रव्य की अपेक्षा से किया गया चिन्तवन है या पर्याय की अपेक्षा से ?

**यदि द्रव्य की अपेक्षा से कहते हो तो** द्रव्य तो शुद्ध-अशुद्ध पर्यायों का पिण्ड है, तुम मात्र उसे शुद्ध ही अनुभव क्यों करते हो ?

**यदि पर्याय अपेक्षा से चिन्तवन करते हो तो** वर्तमान पर्याय तो अशुद्ध है, तुम शुद्ध कैसे मानते हो ?

**यदि तुम अपने को सिद्धसमान मानते हो तो** फिर यह संसार अवस्था किसकी है ?

**यदि तुम केवलज्ञानी हो तो** ये मतिज्ञानादिक किसके हैं ?

**यदि तुम द्रव्यकर्म और नोकर्म से रहित हो तो** तुमको ज्ञानादिक की व्यक्तता क्यों नहीं है ?

**परमानन्दमय हो तो** अब क्या करना है ?

**जन्म-मरणादि दुखों से रहित हो तो** दुखी क्यों हो ?

इस पर वे लोग कहते हैं कि यदि ऐसा है तो फिर शास्त्रों में शुद्ध आत्मा के चिन्तवन का उपदेश क्यों दिया है ?

इसके उत्तर में पण्डितजी कहते हैं कि शुद्धपना दो प्रकार का है ह्न १. द्रव्य अपेक्षा और २. पर्याय अपेक्षा। **(क्रमशः)**

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, सातवाँ अधिकार, पृष्ठ १९८

# 101 स्थानों पर बाल शिविर संपन्न

श्री कुन्दकुन्द स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट देवनगर भिण्ड, अ.भा.जैन युवा फैडरेशन शाखा देवनगर तथा श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनाँक 5 से 13 जून, 2010 तक लगभग 101 स्थानों पर छठवें बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

इन शिविरों में ब्र.रवीन्द्रकुमारजी अमायन, ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, ब्र.कल्पनाबेन के अतिरिक्त श्री टोडरमल दि.जैन सिद्धांत महाविद्यालय जयपुर, श्री आदिनाथ विद्यानिकेतन मंगलायतन, श्री अकलंक शिक्षण संस्थान बांसवाड़ा एवं श्री कुन्दकुन्द विद्यानिकेतन सोनागिरि के लगभग 185 विद्वानों द्वारा महती धर्म प्रभावना हुई।

दिनाँक 5 जून को सीमंधर जिनालय देवनगर भिण्ड में शिविर का उद्घाटन श्री के.के.जैन फरीदाबाद के करकमलों से हुआ। इस अवसर पर आयोजित सभा की अध्यक्षता श्री वीरेन्द्रकुमारजी जैन रानीपुरावालों ने की। मुख्य अतिथि के रूप में डॉ.अशोककुमारजी जैन मंचासीन थे। शिविरार्थियों को दी जानेवाली किट का विमोचन श्री नरेशचन्दजी जैन पानीपत ने किया।

सभा के पूर्व ध्वजारोहण श्री कल्याणकुमारजी जैन दिल्ली ने किया।

इन शिविरों के आयोजन हेतु मुख्यरूप से ऐसे ग्रामीण स्थानों का चयन किया गया था, जहाँ विद्वान नहीं पहुँच पाते हैं। शिविरों के माध्यम से लगभग 13 हजार बालक-बालिकाओं ने तथा लगभग 11 हजार साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

इस शिविर में श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट मुम्बई, श्री दि.जैन मुक्ति मण्डल संघ मुम्बई के अतिरिक्त दिल्ली, जयपुर, मुम्बई, किशनगढ आदि से अनेक मुमुक्षु भाईयों का विशेष सहयोग रहा।

शिविरों के माध्यम से किशोर उम्र के सैंकड़ों बालक-बालिकाओं ने दिगम्बर जैन समाज में माता-पिता की सहमति से ही विवाह करने का संकल्प-पत्र भरा।

**– सुरेशचंद जैन**

# उज्ज्वल भविष्य की कामना

श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धांत महाविद्यालय के स्नातक पण्डित संजयकुमारजी शास्त्री परतापुर (बांसवाड़ा) की सुपुत्री **सुश्री नेहा जैन** ने संस्कृत विद्यालय गनोडा में अध्ययन करते हुये माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राज. अजमेर की वरिष्ठ उपाध्याय परीक्षा-2010 में **संभागीय स्तर** की वरीयता सूची में 82.77 प्रतिशत अंक अर्जित कर **प्रथम स्थान** प्राप्त किया है।

जैनपथप्रदर्शक परिवार आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

# पांच महाद्वीपों में गुरुदेवश्री की जन्मजयंती

दिनाँक १५ मई को मुमुक्षु ऑफ नॉर्थ अमेरिका (**MONA**) द्वारा आयोजित गुरुदेवश्री कानजीस्वामी की १२१ जन्मजयंती अमेरिका, अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया, यूरोप तथा एशिया में निवास करने वाले मुमुक्षुओं द्वारा १२१ से भी अधिक टेलिफोन से युगप्रवर्तक युगपुरुष पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी की जय हो - इस जयनाद से मनायी गई।

इस आयोजन में अमेरिका और कनाडा के अनेक नगरों के अतिरिक्त दुबई, लन्दन, नैरोबी, सिडनी, सिंगापुर, अहमदाबाद, अलीगढ, बैंगलोर, चैन्नई, देवलाली, दिल्ली, कोलकाता, मुम्बई, सोनगढ आदि नगरों से भी अनेक मुमुक्षुओं ने सहर्ष भाग लिया।

इस अवसर पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित देवेन्द्रजी जैन, श्री राजूभाई कामदार तथा पण्डित शैलेषभाई तलोद ने गुरुदेवश्री के व्यक्तित्व और कर्तृत्त्व पर अपने वक्तव्य प्रस्तुत किये। विदेशों में रहने वाले मुमुक्षुओं के प्रतिनिधियों ने विश्व के सभी मुमुक्षुओं के बीच **ग्लोबल युनिटी** की स्थापना की भावना व्यक्त की।

इस पावन प्रसंग पर विदेशों में रहने वाले मुमुक्षु परिवारों को श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट मुम्बई द्वारा गुरुदेवश्री के सभी उपलब्ध प्रवचनों की **डी.वी.डी.** का सेट एवं बाबू जुगल किशोरजी युगल कोटा कृत **चैतन्य की चहल पहल** पुस्तक नि:शुल्क प्रदान करने घोषणा की गई।

इस जन्मजयंती की ऑडियो रिकॉर्डिंग www. jainism.us पर उपलब्ध है। विशेष जानकारी हेतु संपर्क करें -webmaster@jainism.us

# दशलक्षण पर्व हेतु ध्यान दें !

दशलक्षण पर्व में प्रवचनार्थ विद्वान बुलाने हेतु हमारे पास बहुत स्थानों से आमंत्रणपत्र आ चुके हैं। जिन्होंने अभी तक अपने आमंत्रण न भेजे हों, वे अपना आमंत्रण-पत्र शीघ्र भेजें; ताकि समय रहते उचित व्यवस्था की जा सके।

प्रवचनार्थ जाने वाले सभी विद्वानों को स्वीकृति भेजने हेतु पत्र एवं स्मरण पत्र भी भेजे जा चुके हैं, जिन विद्वानों ने अभी तक भी अपनी स्वीकृति नहीं भेजी है, वे अपनी स्वीकृति शीघ्र भेजें। **ह्र मंत्री, टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर**

**प्रकाशन तिथि : 28 जून 2010**

**प्रति,**

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा,** डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

*यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –*
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
**फोन :** (0141) 2705581, 2707458
**E-Mail :** ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127

## हार्दिक बधाई !

**सीकर निवासी श्री फतेहचंदजी जैन एवं श्रीमती सुलोचनादेवी जैन (धोदवाले)** के दाम्पत्य जीवन के स्वर्णिम 50 वर्ष पूर्ण होने पर हार्दिक बधाई। इस अवसर पर वीतराग-विज्ञान एवं जैनपथप्रदर्शक हेतु 250-250/- दानस्वरूप प्राप्त हुये।

## डॉ. भारिल्ल का 2010 में विदेश कार्यक्रम

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी धर्मप्रचारार्थ विदेश जा रहे हैं। यह उनकी 28वीं विदेश यात्रा है। जिन भारतवासी बन्धुओं के परिवार या सम्बन्धी निम्न स्थानों पर रहते हों, वे उन्हें सूचित कर दें। उनकी सुविधा के लिए वहाँ के फोन, फैक्स एवं ई.मेल दिये जा रहे हैं, जहाँ डॉ. भारिल्ल ठहरेंगे।

उनका नगरवार कार्यक्रम निम्नानुसार है ह्र

| क्र. | शहर | सम्पर्क–सूत्र | दिनांक |
|---|---|---|---|
| 1. | लन्दन | **Bhimji Bhai Shah 192-384-0833**<br>**bhimji@hevika.com**<br>**Jayanti Bhai (Gutka)**<br>**0044-208 907 8257 (H)** | 4 से 9 जून |
| 2. | लास एंजिल्स | **Atul Khara 469-831-2163**<br>**Naresh Palkhiwala (R) 562-404-1729**<br>**(O) 626-814-8425 ext.8725**<br>**naresh.palkhiwala@westcov.org** | 11 से 17 जून |
| 3. | मियामी | **Mahendra Shah (R) 305-595-3833**<br>**(O) 305-371-2149**<br>**E-mail : bhitap@bellsouth.net** | 18 से 24 जून |
| 4. | शिकागो | **Niranjan Shah (R) 847-330-1088**<br>**Bipin Bhayani (O) 815-939-3190**<br>**(R) 815-939-0056 (F) 815-939-3159** | 25 से 30 जून |
| 5. | फिला–डेल्फिया (शिविर) | **Atul Khara 469-831-2163**<br>**972-424-4902**<br>**insty@verizon.net** | 1 से 4 जुलाई |
| 6. | सान् फ्रांसिस्को | **Ashok Sethi (R) 408-517-0975**<br>**ashok_k_sethi@yahoo.com** | 5 से 11 जुलाई |
| 7. | डलास | **Atul Khara 469-831-2163**<br>**972-424-4902**<br>**insty@verizon.net** | 12 से 16 जुलाई |

## पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री का विदेश कार्यक्रम

डॉ. भारिल्ल की तरह ही उनके शिष्य पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, देवलाली भी कुछ वर्षों से नियमित धर्मप्रचारार्थ विदेश जा रहे हैं, उनका नगरवार कार्यक्रम निम्नानुसार है ह्र 9 जून से 12 जून – **ह्यूस्टन,** 13 जून से 18 जून – **डलास,** 19 जून से 25 जून – **सॉनफ्रांसिस्को**, 26 से 30 जून – **सॉनडियागो**, 1 से 4 जुलाई – **फिलाडेल्फिया (शिविर)**, 5 से 14 जुलाई – **मियामी**, 15 से 18 जुलाई – **न्यूयार्क,** 19 से 25 जुलाई – **शिकागो**।

समारोह की विशेषता यह थी कि
दिगम्बर समाज ने तो बिना किसी पूर्वाग्रह के
कता प्रदर्शित करते हुये कार्यक्रम को सफल

**वास्तव में तत्त्व का प्रचार–प्रसार डॉ.भारिल्ल ही कर रहे हैं और आगे भी करने वाले यही हैं। –गुरुदेवश्री कानजी स्वामी**

**एक हुकमचंद ही सत्य का कथन करने वाला तैयार हो गया है।**

**– गुरुदेवश्री कानजी स्वामी**

**हीरक जयन्ती के अवसर पर ह्न**

# डॉ. भारिल्ल : मनीषियों की दृष्टि में

वर्तमान तत्त्व की प्रभावना में उसका (डॉ. भारिल्ल का) बड़ा हाथ है, स्वभाव का भी सरल है।...तत्त्व की बारीक से बारीक बात पकड़ लेता है, पण्डित हुकमचंद बहुत ही अच्छा है। **– गुरुदेवश्री कानजीस्वामी**

धर्मानुरागी डॉ.भारिल्ल ने समयपाहुड का जैसा गम्भीर चिंतन मनन किया है, उसे देखकर यदि उनका नाम समयसार भारिल्ल होता तो अधिक उपयुक्त होता। **– आचार्य विद्यानंदजी**

मेरा आत्मा, मेरा रोम–रोम आपके (डॉ.भारिल्ल के) साहित्य को पढकर गद्‌गद् हो उठता है। **ह्न आचार्य धर्मभूषणजी महाराज**

क्रमबद्धपर्याय पुस्तक वर्तमान में सारस्वत विद्वत् लोक में प्रज्वलित प्रकाशमान ध्रुवतारा है। **ह्न स्वस्तिश्री भुवनकीर्ति भट्टारकस्वामीजी**

आपके द्वारा लिखा गया साहित्य युगों–युगों तक जैन शासन को टिकाये रखने में स्तंभ का कार्य करेगा। इतिहास इसकी साक्षी देगा।

**ह्न पण्डित नेमीचन्द पाटनी, आगरा**

डॉ. साहब की लेखनी पर सरस्वती का वरदान है।

**ह्न पण्डित जगनमोहनलाल शास्त्री, कटनी**

भारिल्लजी आगम के आलोक में निर्विवाद रूप से युगों युगों तक श्रद्धा–विनय के साथ स्मृत किये जाते रहेंगे।

**– प्रतिष्ठाचार्य विमलकुमार जैन – सम्पादक (वीतराग–वाणी)**

डॉ. भारिल्ल ऐसे विशिष्ट व्यक्ति हैं, जो सिर्फ अपने मिशन में व्यस्त हैं और यश उनके पीछे भागता है। **ह्न डॉ. राजीव प्रचंडिया**

विषय की गंभीरता को बगैर कोई क्षति पहुँचाये, ज्ञान की गहराईयों में तत्क्षण डुबो देने की कला में माहिर, संपूर्ण भारत के इस श्रेष्ठ वक्ता की वक्तृत्व कला का घोर विरोधी भी नमन करते है।

**– अशोक बड़जात्या, इन्दौर**

# डॉ. भारिल्ल के समन्वय के पाँच सूत्र

1. भूतकाल को भूल जाओ, इसकी चर्चा मत करो।
2. भविष्य के लिये शर्त

अथाह सागर
गरजती तरंगे
देखकर
अनायास ही आपकी
मूरत उभरती
चिंतवन की गहराई
व गंभीरता के दर्शन देते।।

व्योम की विशालता में
आपकी तस्वीर दिखती
असीमित ज्ञान को
अपने में समेटे।।

अनवरत गतिमान
सरिता में
कर्णप्रिय गुंजायमान
धारा में
वही सूरत फिर उभरती
वाणी की मधुरता से
मन को मोहित करते।।

तीर के तीखेपन में
तूफान की तीव्रता में
वही अक्स
फिर उमड़ता
तर्क की तीक्ष्णता से
पाखण्ड का खण्डन करते
एक नया आयाम धरते।।

धरा होती
पल्लवित
तरुओं से आच्छादित
लेखन की सघनता से
नूतन ज्ञान के अंकुर बोते
पाठकों की चित्तधरा में
आप ही आप दिखाई देते।।

भारवि के तेज में
आपके
सर्वांगीण व्यक्तित्व के
प्रफुल्लित आदर्श जीवन के
दर्शन होते।।

हर अंश में प्रकृति के
गुण फैले हैं आपके
गुरुवर हैं
पूजनीय हैं
वंदनीय हैं
चरण आपके....

ह्न सुधीर जैन, अमरमऊ

# एक तो स्वयं जानते नहीं और जाननेवालों की सुनते नहीं

ह्न डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल, जयपुर

**( नोट – ९ अप्रैल २००८ को प्रात: ६ बजकर २० मिनिट पर साधना चैनल पर डॉ. भारिल्ल के आनेवाले प्रवचनों में समयसार की चौथी गाथा और उसकी टीका पर हुये अत्यन्त उपयोगी प्रवचन का महत्त्वपूर्ण अंश जैनपथप्रदर्शक के पाठकों के लाभार्थ यहाँ दिया जा रहा है। ह्न प्रबंध संपादक )**

आत्मानुभव से रहित अज्ञानी जगत की दुर्दशा का चित्र प्रस्तुत करते हुए आचार्य अमृतचन्द्रदेव समयसार की चौथी गाथा की टीका में कहते हैं कि यह लोक संसाररूपी चक्की के पाटों के बीच अनाज के दानों के समान पिस रहा है, मोहरूपी भूत इसे पशुओं के समान जोत रहा है, तृष्णारूपी रोग से यह जल रहा है, विषयभोग की मृगतृष्णा में फंसकर मृग की भांति भववन में भटक रहा है। आश्चर्य की बात तो यह है कि पंचेन्द्रिय विषयों में उलझा हुआ यह अज्ञानी लोक परस्पर आचार्यत्व भी करता है। अज्ञानी लोग विषय-कषाय की चतुराई एक-दूसरे को बताते हैं, सिखाते हैं। पैसा कैसे कमाना, उसे कैसे भोगना आदि बातें एक-दूसरे को बताते हैं; उन्हीं कार्यों को करने की प्रेरणा भी देते हैं।

यदि कदाचित् ऐसे लोग धर्म के क्षेत्र में भी आ जावे तो भी उनकी यह आदत छूटती नहीं है। यहाँ भी वे एक-दूसरे को सिखाते हैं कि चन्दा कैसे इकट्ठा करना और उसका अपनी रुचि के अनुकूल खर्च कैसे करना, कैसे भोगना; उसके दम पर अपना नेतृत्व कैसे कायम करना।

उक्त संदर्भ में मैंने सन् १९७७ ई. में त्याग धर्म की चर्चा करते समय लिखा था ह्न

‘‘समाज में त्याग धर्म के सच्चे स्वरूप का प्रतिपादन करनेवाला विद्वान् बड़ा पण्डित नहीं; बल्कि वह पेशेवर पण्डित बड़ा पण्डित माना जाता है, जो अधिक से अधिक चन्दा करा सके। यह उस देश का, उस समाज का दुर्भाग्य ही समझो, जिस देश व समाज में पण्डित और साधुओं के बड़प्पन का नाप ज्ञान और संयम से न होकर दान के नाम पर पैसा इकट्ठा करने की क्षमता के आधार पर होता है।

इस वृत्ति के कारण समाज और धर्म का सबसे बड़ा नुकसान यह हुआ कि पण्डितों और साधुओं का ध्यान ज्ञान और संयम से हटकर चन्दे पर केन्द्रित हो गया है। जहाँ देखो, धर्म के नाम पर, विशेषकर त्यागधर्म के नाम पर, दान के नाम पर, चन्दा इकट्ठा करने में ही इनकी शक्ति खर्च हो रही है, ज्ञान और ध्यान एक ओर रह गये हैं।

यही कारण है कि उत्तम त्यागधर्म के दिन हम त्याग की चर्चा न करके दान के गीत गाने लगते हैं। दान के भी कहाँ, दानियों के गीत गाने लगते हैं। दानियों के गीत भी कहाँ, एक प्रकार से दानियों के नाम पर यश के लोभियों के गीत ही नहीं गाते; चापलूसी तक करने लगते हैं।

यह सब बड़ा अटपटा लगता है, पर क्या किया जा सकता है ह्न सिवाय इसके कि इससे हम स्वयं बचें और त्यागधर्म का सही स्वरूप स्पष्ट करें; जिनका सद्भाग्य होगा वे समझेंगे, बाकी का जो होना होगा सो होगा।[१]’’

१. धर्म के दशलक्षण, पृष्ठ १२८

त्यागधर्म संबंधी इस प्रकरण की चर्चा स्वामीजी भी भरपूर किया करते थे। वे धर्म के दशलक्षण पुस्तक का उक्त अंश लोगों को बताकर कहते थे कि देखो कैसा सटीक लिखा है।

हाँ, तो अपनी बात यह चल रही थी कि ये लोग धर्म क्षेत्र में आकर भी, धर्म के नाम पर सम्पूर्ण जीवन समर्पित करके भी, आत्मकल्याण की भावना से घर-बार छोड़कर भी, ब्रह्मचर्यादि व्रतों, अणुव्रतों-महाव्रतों को धारण करके भी अपनी पुरानी आदत नहीं छोड़ पाते और अपने को धर्म के नाम पर लौकिक कार्यों में ही उलझाये रखते हैं।

संस्थायें खड़ी करना, नये-नये संस्थानों को खड़ा करना; उनके नाम पर चन्दा इकट्ठा करना, तीर्थों के झगड़ों में उलझना, उनके नाम पर ऐसे काम करना; जो किसी भी रूप में ठीक नहीं माने जा सकते। क्या आप नहीं जानते हैं कि आज कल क्या-क्या नहीं होता है, अदालतों में।

गंभीरता से विचार करने की बात तो यह है कि जिन्होंने आत्मकल्याण की भावना से शादी नहीं की, घर का धंधा-पानी भी छोड़ा, घर छोड़ा; उन्हें तो इसप्रकार के कामों में नहीं उलझना चाहिए। वे तो अपना रहने का स्थान और करने का काम, आध्यात्मिक लाभ की दृष्टि से चुन सकते हैं; क्योंकि वे अपने स्थान और कार्य के चुनाव में पूरी तरह आजाद हैं।

जिन गृहस्थ आत्मार्थी भाइयों को, विद्वानों को अपनी आजीविका स्वयं करनी है; वे तो स्थान और काम चुनने के लिए आजाद नहीं हैं; क्योंकि उन्हें तो जहाँ आजीविका का साधन मिलेगा अर्थात् नौकरी मिलेगी, व्यापार चलेगा; वहाँ रहना होगा। इसीप्रकार काम चुनने में भी वे आजाद नहीं हैं; अपनी-अपनी योग्यतानुसार जहाँ जो काम मिलेगा; वही काम करना होगा। अत: उनके रहने का स्थान और करने का काम उनकी रुचि का द्योतक नहीं है; पर सांसारिक काम छोड़कर आत्मकल्याण करने की भावना वाले गृहत्यागियों का रहने का स्थान और करने का काम उनकी आंतरिक रुचि का द्योतक अवश्य हैं।

उन्हें क्या जरूरत है ऐसे भीड़बाड़ वाले स्थानों पर रहने की, जहाँ न तो आध्यात्मिक वातावरण ही है और न संयम की साधना के योग्य अवसर। जहाँ न्याय-अन्याय पूर्वक भोग-सामग्री जोड़ने और सारी मर्यादायें तोड़कर उन्हें भोगने का ही वातावरण है; ऐसे मुम्बई, कलकत्ता, दिल्ली आदि जैसे स्थानों का चुनाव उनकी किस वृत्ति का परिणाम हो सकता है; इसके बारे में मैं कुछ नहीं कहना चाहता।

मेरी दृष्टि में तो उन्हें रहने के लिए ऐसा शान्त-एकान्त स्थान चुनना चाहिए कि जहाँ उन्हें कुछ सीखने को मिले और यदि वे स्वयं सक्षम विद्वान हैं तो उन्हें कुछ सीखने की भावना रखनेवाले आत्मरुचिवंत श्रोता

मिलें। न तो जहाँ समझानेवाले हों और न समझनेवाले ही, तत्त्वचर्चा करने के लिए बराबरी के आत्मार्थी भी न हों, उनका वहाँ रहना कहाँ तक उचित है ? क्या यह गंभीरता से विचार करने की बात नहीं है ?

प्रवचनसार मैं तो अत्यन्त स्पष्ट शब्दों में लिखा है कि या तो गुणाधिक की संगति में रहना चाहिए या फिर समान गुणवालों की संगति में रहना उचित है। यदि हम उनकी संगति में रहेंगे कि जो निरन्तर आध्यात्मिक शास्त्रों के अध्ययन-मनन में रहते हैं; तो हमें अध्यात्म क्षेत्र में कुछ न कुछ मिलेगा ही; वे बातें भी समझने के लिए मिल सकती हैं कि जिन्हें हम सतत् स्वाध्याय करके भी नहीं समझ सकते। प्रत्येक व्यक्ति को विशिष्ट विद्वानों का सत्समागम सहज संभव नहीं है; अत: उन लोगों को बराबर का अभ्यास करनेवालों की संगति में रहना उचित है।

पंडित टोडरमलजी मोक्षमार्गप्रकाशक में लिखते हैं कि प्रथम तो गहराई से आध्यात्मिक शास्त्रों का स्वयं स्वाध्याय करें। पर जब प्रयत्न करने पर भी जो बात समझ में न आये तो अधिक अभ्यासी गुरुजनों से पूछे, वे न मिले तों साधर्मियों से तत्त्वचर्चा करे; उनसे जो सुनने को मिले उस पर गंभीरता से चिन्तन करे और यह तबतक करता रहे कि जबतक वस्तुस्वरूप पूरी तरह स्पष्ट न हो जाये। इसके अतिरिक्त और जो कुछ भी धर्म के नाम पर किया जाता है, उससे आत्मकल्याण होनेवाला नहीं है।

धर्म के नाम पर, तीर्थक्षेत्र के नाम पर ऐसे वियावान जंगल में जावेंगे कि जहाँ न कोई धर्म की बात सुनने वाला है और न सुनानेवाला; चर्चा करनेवाला भी कोई नहीं। बस मजदूरों को डांटते-फटकारते रहो और चन्दा मांग-मांग कर महल चिनवाते रहो या फिर अदालतों के चक्कर काटते रहो या फिर हजारों बार बोली गई स्तुतियों और पूजनों पर नाच-नाच कर गाते रहो, गवाते रहो, नचाते रहो। आत्मकल्याण के मार्ग में क्या होनेवाला है इन सबसे।

अरे भाई ! स्थान के साथ-साथ काम के बारे में भी गंभीरता से चुनाव करने की बात है। वे लोग अपने को आध्यात्मिक शास्त्रों को पढ़ने-पढ़ाने के, सुनने-सुनाने के, लिखने-लिखाने के, छपाकर घर-घर पहुँचाने के ज्ञानयज्ञ में क्यों नहीं जोड़ते; जिससे स्व-पर का आत्मकल्याण हो ?

आचार्य अमृतचन्द्र आगे लिखते हैं कि एकत्व-विभक्त आत्मा के बारे में न तो स्वयं कुछ जानता है और न जाननेवाले की सेवा करता, न उनका समागम करता है, उनसे सीखने-समझने की कोशिश भी नहीं करता, यदि आगे होकर भी वे कुछ सुनाये-समझायें तो उनकी बात पर ध्यान ही नहीं देता; इसलिए अनादिकाल से संसार में भटक रहा है।

आचार्य कहते हैं कि जाननेवालों की सेवा नहीं करता। सेवा करने का आशय मात्र उनके पैर दबाना नहीं है, उनके लिए लौकिक अनुकूलतायें जुटाना नहीं है; अपितु उनके प्रतिपादन से लाभ उठाना है। वे आत्मा-परमात्मा के संदर्भ में जो कुछ भी समझाते हैं; उसे गहराई से समझने और श्रद्धापूर्वक स्वीकार करने से है। वे जो कुछ लिखते हैं, उसे पढकर; उसके भाव को आत्मसात करने से है।

अरे भाई ! इसके बिना देशनालब्धि संभव नहीं है।

आचार्य अमृतचन्द्र के जमाने में ऐसी स्थिति रही होगी, तभी तो उन्हें यह सब लिखना पड़ा, आज की स्थिति तो इससे अधिक विकट है। आज के जमाने में तो लोग जिनवाणी को न सुनने देते हैं, न सुनाने देते हैं; न पढ़ने देते हैं, न पढ़ाने देते हैं, न लिखने देते हैं; न छपाने देते हैं और न अपने घर में रखते हैं और न घर-घर पहुंचाने देते हैं।

वर्णीजी कहा करते थे कि पुरुषों में ७२ कलायें होती हैं; पर बुन्देलखण्ड के लोगों में २ कलायें अधिक होती हैं। एक तो वे कुछ जानते नहीं हैं और दूसरे जाननेवालों की मानते नहीं हैं। पर मेरा कहना यह है कि यह बात अकेले बुन्देलखण्ड के लिए ही नहीं है; अपितु सम्पूर्ण जगत की यही स्थिति है।

आचार्य अमृतचन्द्रदेव भी तो यही कह रहे हैं कि यह अज्ञानी जगत प्रथम तो जैन तत्त्वज्ञान की मूल बात अर्थात् आत्मा की बात जानता नहीं है और जाननेवालों की उपासना नहीं करता, उनकी सेवा नहीं करता, उसके सत्समागम में नहीं रहता, उनसे लाभ नहीं उठाता; अपितु उनका विरोध करता है; क्योंकि उसे लगता है कि इनके होने से हम प्रतिष्ठित नहीं हो पाते। अरे भाई ! यदि आत्मकल्याण करना है तो आध्यात्मिक शास्त्रों का गंभीर अध्ययन करो, उनका अध्ययन-अध्यापन करनेवालों की संगति में रहो, आध्यात्मिक शास्त्रों के प्रचार-प्रसार में सहयोग करो। आत्मकल्याण के मार्ग में एकमात्र करने-कराने योग्य तो यही सबकुछ है। इसकी उपेक्षा या विरोध करना तो अनंत संसार का कारण है।

हम यह अच्छी तरह जानते हैं कि हमारे इस प्रतिपादन से उन लोगों को कोई लाभ होनेवाला नहीं है, जो इस मार्ग पर बहुत आगे बढ़ चुके हैं, पर जो लोग इस मार्ग पर चलने के लिए मन बना रहे हैं, उन्हें तो लाभ होगा ही।

यदि उनमें से भी किसी की कषाय कुछ मन्द हो जाय या मंद हो गई हो तो वे लोग भी इसका लाभ उठा सकते हैं; पर बात यह है कि सामाजिक कार्यों से जो कुछ थोड़ी-बहुत प्रतिष्ठा उन्हें प्राप्त हो जाती है, उससे उनकी सबसे बड़ी हानि तो यही होती है कि वर्तमान में जिन लोगों से उन्हें अध्यात्म के क्षेत्र में कुछ सीखने-समझने को मिल सकता है; वे उनकी बात न तो श्रद्धापूर्वक ध्यान से सुन ही सकते हैं और न पढ़ सकते हैं।

जो भी हो, वस्तुस्थिति का सत्यज्ञान तो समाज को होना ही चाहिए। यह तो सुनिश्चित ही है कि हमारे इस प्रतिपादन से कभी न कभी, किसी न किसी को, कुछ न कुछ लाभ तो होगा ही; क्योंकि यह लोक बहुत बढ़ा है और काल अनन्त है। हमारा तो यह पक्का विश्वास है कि यहाँ नहीं तो और कहीं तथा अभी नहीं तो कभी न कभी, किसी न किसी को इस प्रतिपादन का लाभ अवश्य होगा। यदि किसी को लाभ होना ही नहीं होता तो हमें इस तथ्य को स्पष्ट करने का भाव (विकल्प) भी नहीं आता; क्योंकि सत्य का प्रतिपादन निरर्थक नहीं होता।

पण्डित टोडरमलजी का लाभ उस समय के लोगों ने लिया हो, चाहे न लिया हो; पर आज हम तो उनके प्रतिपादन का भरपूर लाभ उठा ही रहे हैं। इसीप्रकार आज कोई लाभ उठाये चाहे न उठाये, पर भविष्य में तो कोई न कोई लाभ उठायेगा ही।

# 40 वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर सानन्द सम्पन्न

*** देश के विभिन्न प्रान्तों से पधारे हुये 1352 आत्मार्थी ज्ञानयज्ञ में सम्मिलित। * प्रात: 5 से रात्रि 10 बजे तक विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से 17 घण्टे अविरल ज्ञानगंगा प्रवाहित। * शिविर में लगभग 42 विद्वानों का समाज को लाभ मिला। * बालबोध एवं प्रवेशिका प्रशिक्षण में 380 एवं बाल कक्षाओं में 157 विद्यार्थी सम्मिलित। * शिविर में 80 हजार रुपयों का सत्साहित्य एवं 2240 घण्टों के सी.डी. व कैसिट्स बिके।**

**तीर्थधाम मंगलायतन (अलीगढ-उ. प्र.) :** पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा संचालित एवं तीर्थधाम मंगलायमन द्वारा दिनांक 18 मई से 4 जून, 2008 तक आयोजित 42 वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर अनेक उपलब्धियों के साथ सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

उद्घाटन के समाचार जून (प्रथम) अंक में प्रकाशित किये जा चुके हैं।

**प्रात: कालीन प्रवचन ह्न** प्रतिदिन प्रात: आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के सी.डी.प्रवचन के बाद अन्तर्राष्ट्रिय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के समयसार ग्रंथाधिराज की गाथा 18 से 25 तक मार्मिक प्रवचन हुये।

**रात्रि कालीन प्रवचन ह्न** रात्रिकालीन प्रवचनों के क्रम में पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी जैन आगरा, ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री मंगलायतन, डॉ. राकेशजी शास्त्री मंगलायतन, डॉ. योगेशजी शास्त्री अलीगंज, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन, पण्डित देवेन्द्रजी जैन मंगलायतन, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई, पण्डित सुनीलजी शास्त्री जैनापुरे राजकोट, पण्डित मनीषजी शास्त्री खतौली एवं श्री पवनजी जैन मंगलायतन के विभिन्न विषयों पर प्रवचन हुये। प्रवचनोपरान्त प्रतिदिन सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये गये।

**दोपहर की व्याख्यानमाला में ह्न** पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, पण्डित कोमलचंदजी द्रोणगिरि, पण्डित नन्दकिशोरजी शास्त्री काटोल, डॉ. राजेन्द्रजी बंसल अमलाई, पण्डित नरेन्द्रजी जबलपुर, ब्र. विनोदजी जैन खेकड़ा, पण्डित दिलीपजी बाकलीवाल इन्दौर, पण्डित खेमचन्दजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित संजयजी सेठी जयपुर, पण्डित सुधीरजी शास्त्री मंगलायतन, पण्डित राकेशजी शास्त्री लिधौरा, पण्डित निलयजी शास्त्री टीकमगढ़, पण्डित अशोकजी शास्त्री सोनागिर, पण्डित प्रवीणजी शास्त्री जयपुर, डॉ. सतीशजी अलीगढ़, पण्डित महावीरप्रसादजी अजमेरा एवं पण्डित अनेकान्तजी भारिल्ल मुम्बई के विविध विषयों पर व्याख्यान हुए।

**प्रशिक्षण कक्षायें ह्न** बालबोध प्रशिक्षण की सैद्धान्तिक एवं शिक्षण पद्धति की मुख्य कक्षा पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल एवं पण्डित कमलचन्दजी पिड़ावा तथा प्रवेशिका प्रशिक्षण की सैद्धान्तिक एवं शिक्षण पद्धति की कक्षा पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री व पण्डित कोमलचन्दजी टडावालों ने ली।

**प्रशिक्षण अभ्यास कक्षाओं में** ह्न पण्डित राजेशजी शास्त्री शाहगढ, पण्डित सुनीलजी जैन जैनापुरे राजकोट, पण्डित अशोकजी शास्त्री सोनागिर, पण्डित नरेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित नन्दकिशोरजी शास्त्री कोटोल, श्री महेशजी भोपाल, डॉ. सतीशजी शास्त्री अलीगढ, पण्डित सुधीरजी शास्त्री मंगलायतन, पण्डित प्रवीणजी शास्त्री जयपुर, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री जयपुर, पण्डित अनेकान्तजी भारिल्ल मुम्बई, श्रीमती रंजनाजी बंसल अमलाई, श्रीमती स्वर्णलताजी जैन मंगलायतन एवं श्रीमती लताजी जैन देवलाली का सहयोग प्राप्त हुआ।

**प्रौढ़ कक्षायें ह्न नयचक्र** की कक्षा पण्डित अभयकुमारजी शास्त्रीदेवलाली, **गुणस्थान विवेचन** की कक्षा ब्र. यशपालजी जैन जयपुर एवं पण्डित प्रवीणजी शास्त्री जयपुर, **मोक्षमार्ग प्रकाशक** की कक्षा पण्डित वीरेन्द्रजी आगरा, **नियमसार** की कक्षा पण्डित देवेन्द्रजी मंगलायतन, **तत्त्वार्थसूत्र** की कक्षा पण्डित मनीषजी शास्त्री खतौली, **द्रव्यसंग्रह** की कक्षा पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर एवं **रहस्यपूर्ण चिट्ठी** की कक्षा पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन ने ली।

प्रात: 5 बजे की **प्रौढ़ कक्षा** में पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा, पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, पण्डित कोमलचन्दजी द्रोणगिरि, पण्डित सुनीलजी जैनापुरे राजकोट, पण्डित अशोकजी लुहाड़िया मंगलायतन एवं पण्डित राकेशजी शास्त्री मंगलायतन का लाभ मिला।

बालवर्ग की कक्षाओं का संचालन पण्डित बाबूभाई मेहता एवं श्रीमती शुद्धात्मप्रभाजी टड़ैया के निर्देशन में किया गया; जिसमें लगभग 157 छात्र सम्मिलित हुये, इन छात्रों की शिविर के दौरान दो बार परीक्षायें भी लीं गई।

ज्ञातव्य है कि अभ्यास कक्षायें हिन्दी एवं मराठी भाषाओं में संचालित होती थी।

शिविर के दौरान एक दिन डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा लिखित पश्चाताप खण्डकाव्य की सी.डी.उन्हीं के सान्निध्य में चलाई गई, जिसे उपस्थित जन-समुदाय ने मंत्र मुग्ध होकर सुना तथा मुक्त कंठ से इसकी सराहना की। इसी पश्चाताप खण्डकाव्य के आधार से पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन द्वारा संगीतमय कथा का आयोजन किया गया, जिसने उपस्थित शिविराथियों को भाव-विभोर कर दिया।

**विमोचन :** शिविर में जैन के.जी. भाग-6,7 (हिन्दी व अंग्रेजी), प्रवचनसार (ज्ञान-ज्ञेय तत्त्व प्रबोधिनीटीका), चलते-फिरते सिद्धों से गुरु, जान रहा हूँ देख रहा हूँ, धन्य मुनिराज हमारे हैं आदि पुस्तकों के अतिरिक्त पण्डित जयचन्दजी छाबड़ा द्वारा रचित समयसार वचनिका नामक विशिष्ट ग्रन्थ का विशेष समारोह में उत्साहपूर्वक विमोचन किया गया।

**प्रशिक्षणार्थी सम्मेलन एवं दीक्षान्त समारोह ह्न** बुधवार, दिनांक 4 जून को दोपहर में आयोजित इस समारोह में अनेक प्रशिक्षणार्थियों ने अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का संचालन श्री संजयजी शास्त्री ने किया। आभार प्रदर्शन श्री पवन जैन ने किया।

इस अवसर पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के दीक्षांत भाषण के पश्चात् पण्डित कोमलचन्दजी जैन द्रोणगिरि एवं पण्डित कमलचंदजी जैन पिड़ावा ने प्रशिक्षण कक्षाओं की रिपोर्ट एवं परीक्षा-परिणाम प्रस्तुत किया।

बालबोध एवं प्रवेशिका प्रशिक्षण में प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त छात्रों के अतिरिक्त उत्तीर्ण समस्त प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण-पत्र एवं ग्रन्थ भेंट कर पुरस्कृत किया गया।

## श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड
### श्री टोडरमल स्मारक भवन
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राजस्थान)

**ग्रीष्मकालीन परीक्षा कार्यक्रम सत्र-2010**

| दिन व दिनांक | नाम ग्रन्थ |
|---|---|
| गुरुवार 19 अगस्त 2010 | 1. बालबोध पाठमाला भाग-1 (बा.प्रथम खण्ड) मौखिक<br>2. जैन बालपोथी भाग-1 (मौखिक)<br>3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-1(प्रवेशिका प्रथम खण्ड)<br>4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-1<br>5. छहढाला (पूर्ण)<br>6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) पूर्वार्द्ध<br>7. मोक्षमार्गप्रकाशक (पूर्वार्द्ध)<br>8. जैन सिद्धान्त प्रवेशिका (गोपालदासजी बरैया कृत)<br>9. विशारद प्रथम खण्ड (प्रथम वर्ष) |
| शुक्रवार 20 अगस्त 2010 | 1. बालबोध पाठमाला भाग-2 (बा.द्वितीय खण्ड) मौखिक<br>2. जैन बालपोथी भाग-2 (मौखिक)<br>3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग 2(प्रवेशिका द्वितीयखण्ड)<br>4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-2<br>5. द्रव्यसंग्रह (पूर्ण)<br>6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) उत्तरार्द्ध<br>7. लघु जैनसिद्धान्त प्रवेशिका (सोनगढ़)<br>8. मोक्षमार्गप्रकाशक (उत्तरार्द्ध)<br>9. विशारद प्रथम खण्ड (द्वितीय वर्ष)<br>10. विशारद द्वितीय खण्ड (प्रथम वर्ष) |
| शनिवार 21 अगस्त 2010 | 1. बालबोध पाठमाला भाग-3 (बा.तृतीय खण्ड) मौखिक<br>2. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-3 (प्रवेशिका तृतीय खण्ड)<br>3. रत्नकरण्डश्रावकाचार (पूर्ण)<br>4. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय (पूर्ण)<br>5. विशारद द्वितीय खण्ड (द्वितीय वर्ष) |

**नोट –** (1) सुविधानुसार परीक्षा का समय सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक के बीच में कभी भी सैट किया जा सकता है।

(2) जहाँ एक से अधिक केन्द्र हों, वे आपस में मिलकर समय निश्चित करें।

(3) यदि किन्हीं विषयों के छात्र आपस में टकराते हों तो परीक्षा सुविधानुसार दिन में दो बार ली जा सकती है।

(4) बालबोध पाठमाला भाग 1, 2, 3 और जैन बालपोथी भाग 1 व 2 की परीक्षायें मौखिक लेवें। शेष सभी विषयों की परीक्षायें लिखित में लेवें।

**ह्न ओमप्रकाश आचार्य (प्रबंधक ह्न परीक्षा बोर्ड)**


## श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड
### श्री टोडरमल स्मारक भवन
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राजस्थान)

**ग्रीष्मकालीन परीक्षा कार्यक्रम सत्र-2010**

| दिन व दिनांक | नाम ग्रन्थ |
|---|---|
| गुरुवार 19 अगस्त 2010 | 1. बालबोध पाठमाला भाग-1 (बा.प्रथम खण्ड) मौखिक<br>2. जैन बालपोथी भाग-1 (मौखिक)<br>3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-1(प्रवेशिका प्रथम खण्ड)<br>4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-1<br>5. छहढाला (पूर्ण)<br>6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) पूर्वार्द्ध<br>7. मोक्षमार्गप्रकाशक (पूर्वार्द्ध)<br>8. जैन सिद्धान्त प्रवेशिका (गोपालदासजी बरैया कृत)<br>9. विशारद प्रथम खण्ड (प्रथम वर्ष) |
| शुक्रवार 20 अगस्त 2010 | 1. बालबोध पाठमाला भाग-2 (बा.द्वितीय खण्ड) मौखिक<br>2. जैन बालपोथी भाग-2 (मौखिक)<br>3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग 2(प्रवेशिका द्वितीयखण्ड)<br>4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-2<br>5. द्रव्यसंग्रह (पूर्ण)<br>6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) उत्तरार्द्ध<br>7. लघु जैनसिद्धान्त प्रवेशिका (सोनगढ़)<br>8. मोक्षमार्गप्रकाशक (उत्तरार्द्ध)<br>9. विशारद प्रथम खण्ड (द्वितीय वर्ष)<br>10. विशारद द्वितीय खण्ड (प्रथम वर्ष) |
| शनिवार 21 अगस्त 2010 | 1. बालबोध पाठमाला भाग-3 (बा.तृतीय खण्ड) मौखिक<br>2. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-3 (प्रवेशिका तृतीय खण्ड)<br>3. रत्नकरण्डश्रावकाचार (पूर्ण)<br>4. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय (पूर्ण)<br>5. विशारद द्वितीय खण्ड (द्वितीय वर्ष) |

**नोट –** (1) सुविधानुसार परीक्षा का समय सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक के बीच में कभी भी सैट किया जा सकता है।

(2) जहाँ एक से अधिक केन्द्र हों, वे आपस में मिलकर समय निश्चित करें।

(3) यदि किन्हीं विषयों के छात्र आपस में टकराते हों तो परीक्षा सुविधानुसार दिन में दो बार ली जा सकती है।

(4) बालबोध पाठमाला भाग 1, 2, 3 और जैन बालपोथी भाग 1 व 2 की परीक्षायें मौखिक लेवें। शेष सभी विषयों की परीक्षायें लिखित में लेवें।

**ह्न ओमप्रकाश आचार्य (प्रबंधक ह्न परीक्षा बोर्ड)**